प्रस्तुतकर्ता

सन्तोष कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर – संस्कृत

राजकीय महाविद्यालय जक्खिनी वाराणसी

विषय- संस्कृत

बी.ए. - प्रथम सेमेस्टर (मेजर)

- इकाई –1/(3)

शीर्षक - संस्कृत वांङ्ग्मय में पारंपरिक ज्ञान विज्ञान-

उपशीर्षक- आधुनिक ज्ञान विज्ञान

स्वघोषणा

(disclaimer/ self-Declaration)

यह सामग्री विशेष रुप से शिक्षण और सीखने को बढ़ाने के शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए है।आर्थिक /वाणिज्यिक अथवा किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग पूर्णता

प्रतिबंधित है। सामग्री के उपयोगार्थ इसे किसी और के साथ वितरित, प्रसारित या साझा नहीं करेंगे और इसका प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान की उन्नति के लिए ही करेंगे। इस कंटेंट में जो जानकारी दी गई है वह प्रमाणित है और मेरे ज्ञान के अनुसार सर्वोत्तम है।

" The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other used for economic / commercial purpose is strictly prohibited the users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted and advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per my knowledge."

आधुनिक ज्ञान विज्ञान

बोधायन ने शुल्वसूत्र में वृत्त एवं त्रिभुज के फल का सिद्धांत प्रतिपादित किया जो रेखा गणित में पाइथागोरस प्रमेय का सादृश्य रखता है। आर्यभट्ट प्रथम ने पांचवी सदी ईस्वी में आर्यभट्टीयम में परिधि-व्यास-अनुपात को निर्धारित किया जिसे पाई के नाम से जाना जाता है। आर्यभट्ट के कार्य के आधार पर भारत में कुट्टक सिद्धांत का विकास हुआ। वाराहमिहिर ने वृहत्संहिता में भूगोल, उल्काविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, कृषि, अभियांत्रिकी जंतु विज्ञान आदि विषयों का प्रतिपादन किया है।भास्कराचार्य प्रथम(600 ईसवी में)ने महाभास्करीयम् एवं लघुभास्करीयम् में ग्रह नक्षत्रों की गणना, ज्यामितीय त्रिकोणमितीय सिद्धांतों का उल्लेख किया है।ब्रह्मगुप्त(591ईसवी), वेंकटेश्वर(800ई.), मुंजाल(932ईसवी), आर्यभट्ट द्वितीय (950 ईसवी), भास्कर द्वितीय(1114 ईसवी) एवं नीलकंठ(1465 इसवी) ने अपने ग्रंथों में गणित शास्त्र को विकसित किया । आयुर्वेद के क्षेत्र में औषधिविज्ञान के लिए चरक की चरकसंहिता शल्य चिकित्सा के लिए सुश्रुतसंहिता शरीर रचना के लिए वाग्भट कृत

अष्टांगहृदयम् एवं रसरत्नसमुच्चय वर्तमान एवं भविष्य के लिए भी उपयोगी रहेंगे । माधवकर कृत माधवनिदान, रोगनिदान, नागार्जुन कृत रसहृदय आदि प्रमुख हैं। सैन्य विज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञान, वास्तुशास्त्र, धातु विज्ञान नौका विज्ञान एवं विमान और पोत निर्माण संबंधी साहित्य संस्कृत में उपलब्ध हैं। प्रकृति के प्रति हम भारतीय संवेदनशील रहे हैं हमारा शरीर पृथ्वी जल, तेज ,वायु, आकाश इन पांच तत्वों से निर्मित माना जाता है। पर्यावरण की ओर उन्मुख होने की जो प्रक्रिया है इसी कारण है हम पृथ्वी के पुत्र हैं अथर्ववेद में कहा गया है माता भूमिः पुत्रोऽहम पृथिव्याः इसी तरीके की उदात्त भावना प्राकृतिक तत्वों के प्रति है वैज्ञानिक तथ्यों की चर्चा अनेक ग्रंथों में मिलती है आधुनिक विज्ञान के अनेक सिद्धांत संस्कृत ग्रंथों में निहित हैं।

महर्षि कणाद ने ईसा पूर्व में वैशेषिक दर्शन मे परमाणु वाद का सिद्धांत बताया है। आर्यभट्ट की कुट्टक पद्धति का प्रयोग ज्योतिषी सिद्धांतों में हुआ चीन में भी इस पद्धति का अनुसरण किया गया। आर्यभट्ट ने सर्वप्रथम प्रतिपादित किया कि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है तारे स्थिर रहते हैं जिसको हजार वर्षों बाद कैप्लर एवं कॉपरनिकस वैज्ञानिकों ने उसी रूप में प्रस्तुत किया । हजारों वर्ष पूर्व आर्ष ग्रंथ सूर्य सिद्धांत में गुरुत्वाकर्षण का सविस्तार विवेचन किया गया है।भास्कराचार्य ने 1150 ईस्वी में अपने ग्रंथ सिद्धांतशिरोमणि में पृथ्वी पर स्थित वस्तुओं पर गुरुत्वाकर्षण के लागू होने का विवेचन किया है ।पृथ्वी में आकर्षण शक्ति है इस शक्ति से आकाश की ओर फेंका हुआ पदार्थ पुनः वापस आता है क्योंकि पृथ्वी गुरुत्वाकर्षण के कारण उसे खींचती है। जिसे बाद में आधुनिक वैज्ञानिक न्यूटन ने प्रतिपादित किया । बोधायन के शुल्वसूत्र सूत्र में ज्यामिति के प्रारंभिक विकास का वर्णन है दिए गए क्षेत्रफल के वृत्त के बराबर क्षेत्रफल वाले वर्ग बनाने की प्रक्रिया वर्णित है । गणित में शून्य की अवधारणा, दाशमिक प्रणाली, प्रस्तार पद्धति, अनन्त की अवधारणा, पृथिवी की गति, शल्य चिकित्सा संस्कृत वांङ्गमय की देन है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास डॉ कपिल देव द्विवेदी।

2- संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास राधावल्लभ त्रिपाठी।

3- संस्कृत साहित्य का नवीन इतिहास विनय कुमार राय